पाठ 14

इकारान्त और उकारान्त नपुं. लिंग संज्ञाओं, विशेषणों और एक से दस तक संख्याओं के रूप, स्वर संधि, एक वार्तालाप, दो श्लोक

14.1 सं. वारि (पानी) और **वस्तु** (चीज़) क्रमशः **इकारान्त** और **उकारान्त** नपुंसकलिंग संज्ञाएँ हैं। इन संज्ञाओं के रूप नीचे दिए गए हैं:

	वारि			**वस्तु**		
	एकव.	द्विवचन	बहुवचन	एकव.	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	**वारि**	**वारिणी**	**वारीणि**	**वस्तु**	**वस्तुनी**	**वस्तूनि**
द्वितीया	"	"	"	"	"	"
तृतीया	**वारिणा**	**वारिभ्याम्**	**वारिभि:**	**वस्तुना**	**वस्तुभ्याम्**	**वस्तुभि:**
चतुर्थी	**वारिणे**	"	**वारिभ्य:**	**वस्तुने**	"	**वस्तुभ्य:**
पंचमी	**वारिण:**	"	"	**वस्तुन:**	"	"
षष्ठी	"	**वारिणो:**	**वारीणाम्**	"	**वस्तुनो:**	**वस्तूनाम्**
सप्तमी	**वारिणि**	"	**वारिषु**	**वस्तुनि**	"	**वस्तुषु**

संबोधन कारक में **वारि** और **वस्तु** के रूप क्रमशः **वारे** और **वस्तो** होते हैं। इन दोनों संज्ञाओं के **इ** और **उ** के रूपों में होने वाले परिवर्तनों की समानता पर भी ध्यान दें। जिन स्थानों पर वारि का **इ** बदलकर **ई** हो जाता है (जैसे 1-3, 2-3, और 6-3 में) वहाँ वस्तु का **उ** बदलकर **ऊ** हो जाता है।

14.2 वि. इकारान्त और **उकारान्त विशेषण.** सामान्य रूप से **इकारान्त** और **उकारान्त** विशेषणों के तीनों लिंगों में रूप उन इकारांत और उकारांत संज्ञाओं के रूपों की तरह चलते हैं जिनकी ये विशेषता बताते हैं। इस बारे में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें–

i) नपुंसकलिंग में इन **इकारान्त** और **उकारान्त** विशेषणों के रूप प्रथमा, द्वितीया और संबोधन को छोड़कर शेष विभक्तियों में पुंलिंग संज्ञाओं की तरह विकल्प से चलते हैं, जैसे:–

स्वादुन: फलस्य, **स्वादो:** फलस्य (स्वादिष्ठ फल का)

शुचिनि स्थाने, **शुचौ स्थाने** (स्वच्छ स्थान पर)

ii) बहु (बहुत-से), **स्वादु** (स्वादिष्ठ), **लघु** (छोटा, हल्का), **गुरु** (बड़ा, भारी) आदि उकारान्त विशेषणों के स्त्रीलिंग रूप विकल्प से **ई** प्रत्यय के योग से **बह्वी, स्वाद्वी, लघ्वी, गुर्वी** आदि भी बनते हैं और इनके रूप ईकारान्त संज्ञाओं की तरह चलते हैं, जैसे:–
बहव्य: बालिका: तत्र क्रीडन्ति–बहुत-सी लड़कियाँ वहाँ खेल रही हैं।

14.3 वि. नीचे संस्कृत की एक से दस तक संख्याओं के मूल (प्रतिपदिक) रूप दिए गए हैं–

एक:	एक	**षष्**	छह
द्वि:	दो	**सप्तन्**	सात
त्रि:	तीन	**अष्टन्**	आठ
चतुर्	चार	**नवन्**	नौ
पञ्चन्	पाँच	**दशन्**	दस

इनमें से केवल **एक, द्वि, त्रि** और **चतुर्** के रूप तीनों लिंगों में बनते हैं और इनके लिंग और विभक्ति उस संज्ञा के अनुसार होते हैं जिसकी ये विशेषता बताते हैं। **एक** और **द्वि** के रूप क्रमशः एकवचन और द्विवचन में ही चलते हैं। **त्रि** से आगे की सभी संख्याओं के रूप केवल बहुवचन में होते हैं। **एक, द्वि, त्रि** और **चतुर्** के रूप आगे दिए गए हैं:

	एक			**द्वि**		
	पु.	स्त्री.	नपुं.	पु.	स्त्री.	नपुं.
प्रथमा	**एक:**	**एका**	**एकम्**	**द्वौ**	**द्वे**	**द्वे**
द्वितीया	**एकम्**	**एकाम्**	**एकम्**	"	"	"
तृतीया	**एकेन**	**एकया**	**बाकी रूप**	**द्वाभ्याम्**	**द्वाभ्याम्**	बाकी रूप
चतुर्थी	**एकस्मै**	**एकस्यै**	**पुंलिंग**	"	"	पुंलिंग
पंचमी	**एकस्मात्**	**एकस्या:**	**की तरह**	"	"	की तरह
षष्ठी	**एकस्य**	"		**द्वयो:**	**द्वयो:**	
सप्तमी	**एकस्मिन्**	**एकस्याम्**		"	"	

	त्रि			**चतुर्**		
	पु.	स्त्री.	नपुं.	पु.	स्त्री.	नपुं.
प्रथमा	**त्रय:**	**तिस्र:**	**त्रीणि**	**चत्वार:**	**चतस्र:**	**चत्वारि**
द्वितीया	**त्रीन्**	"	"	**चतुर:**	"	"
तृतीया	**त्रिभि:**	**तिसृभि:**	**बाकी रूप**	**चतुर्भि:**	**चतसृभि:**	**बाकी रूप**
चतुर्थी	**त्रिभ्य:**	**तिसृभ्य:**	**पुंलिंग**	**चतुर्भ्य:**	**चतसृभ्य:**	पुंलिंग
पंचमी	"	"	की तरह	"	"	की तरह
षष्ठी	**त्रयाणाम्**	**तिसृणाम्**		**चतुर्णाम्**	**चतसृणाम्**	
सप्तमी	**त्रिषु**	**तिसृषु**		**चतुर्षु**	**चतसृषु**	

14.4 वि. पञ्चन्, **षष्** और **अष्टन्** के रूप नीचे दिए हैं: **सप्तन्, नवन्** और **दशन्** के रूप **पञ्चन्** की तरह ही चलते हैं। **अष्टन्** की **षष्ठी** विभक्ति को छोड़कर सभी विभक्तियों में दो-दो रूप बनते हैं।

	पञ्चन्	**षष्**	**अष्टन्**
प्रथमा	**पञ्च**	**षट्**	**अष्ट, अष्टौ**
द्वितीया	"	"	**अष्ट, अष्टौ**
तृतीया	**पञ्चभिः**	**षड्भिः**	**अष्टभिः, अष्टाभिः**
चतुर्थी	**पञ्चभ्यः**	**षड्भ्यः**	**अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः**
पंचमी	"	"	**अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः**
षष्ठी	**पञ्चानाम्**	**षण्णाम्**	**अष्टानाम्**
सप्तमी	**पञ्चसु**	**षट्सु**	**अष्टसु, अष्टासु**

14.5 अ. वाक्यों को बोलकर पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

क. 1. महादेवः एकः कृषक[1] अस्ति। 2. रामदेवः ब्रह्मदेवः च तस्य द्वौ भ्रातरौ स्तः। 3. एते त्रयः ग्रामस्य एकस्मिन् एव गृहे वसन्ति। 4. रामदेवस्य द्वे कन्ये[2], एकः पुत्रः च सन्ति। 5. ते सर्वे मिलित्वा[3] पञ्च जनाः भवन्ति। 6. ब्रह्मदेवस्य द्वौ पुत्रौ तिस्रः कन्याः च सन्ति सर्वे मिलित्वा सप्त जनाः तत्र वसन्ति। 7. महादेवस्य गृहे तस्य जाया[4] एकश्च पुत्रः स्तः। 8. ते त्रयः जनाः सन्ति। 9. महादेवस्य चतस्रः धेनवः सन्ति। 10. सः चतस्रः अपि धेनूः स्नेहेन पालयति[5]।

(**शब्दार्थ**: 1. किसान; 2. कन्याए लड़की, 3. कुल मिलाकर; 4. पत्नी, 5. पालता है)

ख. 1. अहं द्वाभ्यां बालिकाभ्यां चतुर्भि बालकैश्च सह नगरमगच्छम्। 2. एतानि नव पुस्तकानि तेभ्यः पंचभ्यः छात्रेभ्यः सन्ति। 3. तासां तिसृणां बालिकानां नृत्यम्[1] अति मनोहरम् आसीत्। 4. अपि त्वं तानि त्रीणि चलचित्राणि[2] अपश्यः? 5. न, अहं केवलं द्वे चलचित्रे एव अपश्यम्। 6. सर्वेषां मनुष्याणां पंच ज्ञानेन्द्रियाणि पंच कर्मेन्द्रियाणि च सन्ति। 7. मनः एकादशकम्[3] इन्द्रियम् अस्ति। 8. एकस्मिन् सप्ताहे सप्त दिनानि भवन्ति।

(**शब्दार्थ**:—1. नाच, 2. फिल्में; 3. ग्यारहवाँ)

14.6 अ. निम्नलिखित वाक्यों में कोष्ठक में दिए गए संख्यावाचक विशेषणों के उपयुक्त रूपों से रिक्त स्थान भरिए:

i. तस्यां वाटिकायां ..... बालिकाः नृत्यन्ति। (चतुर्)

ii. एतेषु पुस्तकेषु ..... चित्राणि सन्ति। (त्रि)

iii. तौ ..... बालकौ विद्यालयं गच्छतः। (द्वि)

iv. अहं ..... बालकैः सह अत्र क्रीडामि। (दश)

v. तयोः ..... घटयोः शीतलं जलमस्ति। (द्वि)

vi. ·····मुनिना सह ····· शिष्याः निवसन्ति स्म। (एक),(दशन्)

vii. इमानि ·····पुस्तकानि ··· ····· सन्ति। (चतुर्), (चतुर्)

14.7 संधि. जब **इ** या **ई** के बाद इनसे भिन्न कोई स्वर हो तो इन दोनों के स्थान पर **य्** हो जाता है। इसी तरह जब **उ** या **ऊ**के बाद इनसे भिन्न कोई स्वर हो तो ये दोनों **व्** में बदल जाते हैं। इस संधि के कुछ उदाहरण नीचे दिए हैंः

अति	+	**अधिकम्**	=	**अत्यधिकम्**	(बहुत अधिक)
दहति	+	**अग्निः**	=	**दहत्यग्निः**	(आग जला देती है)
अनु	+	**अभवत्**	=	**अन्वभवत्**	(अनुभव किया)
अनु	+	**अगच्छत्**	=	**अन्वगच्छत्**	(अनुसरण किया)

14.8 वार्तालाप

1. **महेशः** कुतः आगच्छति भवती?
2. **विमला** अहं पुस्तकालयात् आगच्छामि।
3. **महेशः** अधुना भवती कस्य विषयस्य अध्ययनं करोति?
4. **विमला** अहं गणितं विज्ञानं च पठामि। मह्यं विज्ञानम् अतीव रोचते। विज्ञानस्य अध्ययनाय गणितस्य ज्ञानम् आवश्यकम्। गणितं विना विज्ञानस्य अध्ययनम् असंभवम्।
5. **महेशः** मह्यम् अपि विज्ञानं रोचते। विज्ञानेन वयं बहूनां वस्तूनां विषये ज्ञानं लभामहे।
6. **विमला** अहं दर्शनम् अपि पठामि। दर्शनेन मनुष्यः स्वस्य विषये ज्ञानं लभते।
7. **महेशः** दर्शनं मह्यम् रोचते। अहमधुना पतंजलिमुनेः योगसूत्रं पठामि। योगासनानि अपि करोमि। योगेन ज्ञानम् च आयुः च वर्धते।
8. **विमला** भवान् योगं कुत्र शिक्षते?
9. **महेशः** अस्माकं नगरे एव एकं योगकेन्द्रं वर्तते। अहं तत्र योगं शिक्षे। एकः विद्वान् गुरुः अस्मान् योगं शिक्षयति।
10. **विमला** अपि सः गुरुः संस्कृतम् अपि शिक्षयति।
11. **महेशः** आम्, अस्माकं गुरुः तस्मिन् केन्द्रे संस्कृतमपि शिक्षयति। योगस्य अध्ययनाय संस्कृतस्य ज्ञानम् आवश्यकम् इति अस्माकं गुरुः मन्यते। अहमपि एवं मन्ये।
12. **विमला** संस्कृतस्य कक्षायां कति छात्राः सन्ति?
13. **महेशः** संस्कृतस्य कक्षायां दश छात्राः वर्तन्ते। षट् युवकाः चतस्रः च युवत्यः वर्तन्ते। वयं सर्वे संस्कृतस्य कक्षायाम् अतीव मोदामहे।

14. **विमला** अहमपि योगं शिक्षितुम् इच्छामि। अहं योगस्य विषये त्रीणि पुस्तकानि अपठम्। किन्तु मम ज्ञानं पुस्तकस्य ज्ञानमेव वर्तते।

15. **महेशः** तत् योगकेन्द्रं सर्वेभ्यः जनेभ्यः अस्ति। भवत्याः तत्र स्वागतम्।

14.9 प. (**क**) आइए, अब हम हितोपदेश का एक श्लोक पढ़ें

अयं निजः[1] परोवेति[2] गणना[3] लघुचेतसाम्[4]।
उदारचरितानां[5] तु वसुधैव[6] कुटुम्बकम्[7]॥

(**शब्दार्थ**: 1. अपना, 2. (**परोवेति= परः वा इति**) वा= या, **परः**—पराया, दूसरा व्यक्ति, **इति**= ऐसा, 3. गिनती, 4. संकुचित हृदय वालों का, 5. विशाल हृदय वालों का, 6. **वसुधैव**—**वसुधा** - एव- सारा संसार ही, पूरी पृथ्वी ही, 7. छोटा-सा परिवार)

(ख) आइए, अब हम एक बुरे व्यक्ति और अच्छे व्यक्ति की मित्रता के बारे में पढ़ें :

आरम्भगुर्वी[1] क्षयिणी[2] क्रमेण[3] लघ्वी[4] पुरा[5] वृद्धिमती[6] च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वा-परार्धभिन्ना[7] छायेव मैत्री[8] खल-सज्जनानाम्[9]॥

(**शब्दार्थ**:—1. **आरम्भः**—शुरु में, **गुर्वी**—(गुरु का स्त्री.) बड़ी, 2. घटती हुई, छोटी होती हुई, 3. क्रम से, धीरे-धीरे, 4. **लघ्वी**—(लघु का स्त्री.) छोटी, 5. पहले, आरम्भ में, 6. बढ़ती हुई, 7. **पूर्वार्ध**—पहला आधा, **परार्ध**—पिछला आधा, **भिन्ना**—अलग-अलग, 8. मित्रता, दोस्ती, 9. **खलः**—दुष्ट व्यक्ति, **सज्जनः**—अच्छा व्यक्ति।)

14.10 अ. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

1. बहुत-से लोग मेहनत से धन कमाते हैं। 2. हमें सुन्दर चित्र अच्छे लगते हैं। 3. मैं सफलता पाने की कोशिश करता हूँ। 4. उन दोनों शिष्यों ने अपने गुरु की सेवा की। 5. हमने हमेशा उसकी सलाह ली। 6. हमारी कक्षा में आठ लड़कियाँ हैं। 7. वे दोनों लड़के मेरे मित्र थे। 8. हम सब यहाँ आनन्दपूर्वक हैं। 9. आप यहाँ क्या सीख रहे हैं। 10. हम यहाँ संस्कृत सीख रहे हैं।

अभ्यासों के उत्तर

14.5 क. 1. महादेव एक किसान है। 2. रामदेव और ब्रह्मदेव उसके दो भाई हैं। 3. ये तीनों गाँव में एक ही घर में रहते हैं। 4. रामदेव की दो लड़कियाँ और एक पुत्र हैं। 5. वे कुल मिलाकर पाँच लोग हैं। 6. ब्रह्मदेव के दो लड़के और तीन लड़कियाँ हैं। ये कुल मिलाकर सात लोग वहाँ रहते हैं। 7. महादेव के घर में उसकी पत्नी और एक पुत्र हैं। 8. वे तीन लोग हैं। 9. महादेव के पास चार गाएँ हैं। 10. वह चारों गायों को प्यार से पालता है।

ख. 1. मैं दो लड़कियों और चार लड़कों के साथ शहर गया। 2. ये नौ पुस्तकें उन पाँच विद्यार्थियों के लिए हैं। 3. उन तीन लड़कियों का नाच बहुत सुन्दर था। 4. क्या तुमने वे तीनों फिल्में देखीं? 5. नहीं, मैंने केवल दो फिल्में ही देखीं। 6. सब मनुष्यों के पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। 7. मन ग्यारहवीं इन्द्रिय है। 8. एक सप्ताह में सात दिन होते हैं।

14.6 1. चतस्रः ; 2. त्रीणि, 3. द्वौ, 4. दशभिः, 5. द्वयोः; 6. एकेन, दश, 7. चत्वारि, चतसृणाम्।

14.8 1. **महेशः**—आप कहाँ से आ रही हैं? 2. **विमला**—मैं पुस्तकालय से आ रही हूँ। 3. **महेशः**—अब आप किस विषय की पढ़ाई कर रही हैं? 4. **विमला**—मैं गणित और विज्ञान पढ़ रही हूँ। मुझे विज्ञान बहुत अच्छा लगता है। विज्ञान के अध्ययन के लिए गणित का ज्ञान आवश्यक है। गणित के बिना विज्ञान का अध्ययन संभव नहीं है। 5. **महेशः**—मुझे भी विज्ञान पसन्द है। विज्ञान से हम बहुत.सी वस्तुओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। 6. **विमला**—मैं दर्शन भी पढ़ती हूँ। दर्शन के द्वारा मनुष्य अपने बारे में जानता है। 7. **महेशः**—मुझे भी दर्शन पसंद है। अब मैं पतंजलि मुनि का योग सूत्र पढ़ रहा हूँ। मैं योगासन भी करता हूँ। योग से मनुष्य का ज्ञान और आयु बढ़ती है। 8. **विमला**—आप योग कहाँ सीखते हैं? 9. **महेशः**—हमारे शहर में ही एक योग का केन्द्र है। मैं वहाँ योग सीखता हूँ। एक विद्वान गुरु हमें योग सिखाते हैं। 10. **विमला**—क्या वे गुरु जी संस्कृत भी पढ़ाते हैं? 11. **महेशः**—हाँ, हमारे गुरु उस केन्द्र में संस्कृत भी पढ़ाते हैं। योग पढ़ने के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है ऐसा हमारे गुरुजी मानते हैं। मैं भी यही मानता हूँ। 12. **विमला**—संस्कृत की कक्षा में कितने विद्यार्थी हैं? 13. **महेशः**—संस्कृत की कक्षा में दस छात्र हैं। छह युवक और चार युवतियाँ हैं। हम सब को संस्कृत की कक्षा में अत्यधिक आनन्द मिलता है। 14. **विमला**—मैं भी योग सीखना चाहती हूँ। मैंने योग के बारे में तीन पुस्तकें पढ़ी हैं। परन्तु मेरा ज्ञान केवल किताबी ज्ञान है। 15. **महेशः**—वह योग का केन्द्र सभी लोगों के लिए है। वहाँ आपका स्वागत है।

14.9 क. यह मेरा अपना है या पराया है, ऐसा विचार छोटे (संकुचित) दिलवाले लोग ही करते हैं। उदार हृदयवाले मनुष्यों के लिए तो सारी पृथ्वी ही एक छोटे-से कुटुम्ब के समान है।

ख. दुष्ट व्यक्ति और सज्जन व्यक्ति की मित्रता उतनी ही अलग होती है जितनी कि दिन के पहले भाग की छाया, दिन के पिछले भाग की छाया से भिन्न होती है। दिन के पहले भाग की छाया की तरह दुष्ट व्यक्ति की मित्रता आरम्भ में बहुत तेजी से बढ़ती है। परन्तु बाद में यह घटती जाती है। दूसरी ओर, सज्जन व्यक्ति की मित्रता दिन के पिछले भाग की छाया की तरह होती है यह आरम्भ में थोड़ी होती है परन्तु बाद में यह धीरे-धीरे बढ़ती जाती है।

14.10 1. बहवः जनाः परिश्रमेण धनं लभन्ते। 2. अस्मभ्यं सुन्दराणि चित्राणि रोचन्ते। 3. अहं सफलतायै चेष्टे। 4. तौ द्वौ शिष्यौ स्वगुरुम् असेवेताम्। 5. वयं सदा तम् अमन्त्रयामहि। 6. अस्माकं कक्षायां अष्टौ बालिकाः सन्ति। 7. तौ द्वौ बालकौ मम मित्रे आस्ताम्। 8. वयं सर्वे अत्र मोदामहे। 9. यूयम् अत्र किं शिक्षध्वे? 10. वयमत्र संस्कृतं शिक्षामहे।